भारत : विश्व स्तनपान सप्ताह, 2020 (1-7 अगस्त, 2020)

पर्यावरण सुरक्षा एवं अच्छे स्वास्थ्य के लिए स्तनपान को बढ़ावा दें

स्तनपान को बढ़ावा देने का एक अवसर है कोविड- 19

विश्व स्वास्थ्य सप्ताह, 2020 के उद्देश्य

1. माँ के दूध के विकल्पों (बी.एम.एस.) से पर्यावरण पर हानिकारक प्रभावों को रोकने के लिए कदम उठाना और स्तनपान से पर्यावरण की सुरक्षा के बारे में जागरूकता उत्पन्न करना।
2. *शिशु दूध के विकल्प, फीडिंग बोतल और शिशु खाद्य पदार्थ (उत्पादन, आपूर्ति एवं वितरण का विनियमन) अधिनियम, 1992 और संशोधन अधिनियम 2003* के कार्यान्वयन के लिए विशेष रूप से स्तनपान के संरक्षण, संवर्धन एवं समर्थन में सुधार लाने के लिए विभिन्न राज्यों में पैरोकारी हेतु समूहों को शामिल करना।

भूमिका

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू.एच.ओ.) ने शिशु और छोटे बच्चों के लिए स्वास्थ्यप्रद आहार की सिफारिश की है। इसमें उन्हें जीवन के पहले 6 महीनों के दौरान केवल स्तनपान कराने, दो वर्ष एवं उससे अधिक उम्र तक स्तनपान जारी रखने, छह महीने की उम्र के बाद पर्याप्त, सुरक्षित एवं पोषक तत्वों से भरपूर खाद्य पदार्थों का पूरक आहार देने को कहा गया है। डब्ल्यू.एच.ओ. के अनुसार[1] "बच्चे के जीवन के पहले दो वर्षों में इष्टतम पोषण उसके स्वस्थ विकास को बढ़ावा देता है और संज्ञानात्मक विकास में सुधार लाता है। यह बाद के जीवन में उसके अधिक वजनी होने या मोटापे और असंक्रामक बीमारियों के विकास के जोखिम में भी कमी लाता है।"

शिशु को स्तनपान कराना जलवायु-हितैषी और पर्यावरण की दृष्टि से सतत आहार पद्धति है क्योंकि इसमें हमारी पृथ्वी के दुर्लभ प्राकृतिक संसाधनों या कच्चे माल का उपयोग नहीं होता। इससे वाकई में पर्यावरण का संरक्षण और कचरे एवं प्रदूषण के स्रोतों का उन्मूलन होता है। पिछले कुछ वर्षों में शिशु स्वास्थ्य और प्रयावरण संरक्षा में स्तनपान की भूमिका के बारे में वैज्ञानिक साहित्य में बढ़ोतरी हुई है।[2,3,4,5]

माँ के दूध के विकल्प (बी.एम.एस.) अति-प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ (अल्ट्रा-प्रोसेस्ड फूड्स) होते हैं, जो उत्पादन, पैकेजिंग, वितरण, मार्केटिंग और उपयोग के विभिन्न चरणों में बहुत बड़ी मात्रा में ग्रीनहाउस गैसें (जी.एच.जी.)[6] उत्पन्न करते हैं। माँ के दूध के विकल्पों का औद्योगिक रूप से उत्पादन किया जाता है और खाद्य पदार्थ उद्योग स्तनपान की जगह लेने की हरसंभव कोशिश करता है तथा जलवायु परिवर्तन के बोझ में बढ़ोतरी करता है। माँ के दूध के विकल्पों का उपयोग बोतल एवं उनके निपल्स, टिन कंटेनर और प्रचार सामग्री के रूप में कचरा उत्पन्न करता है, जिसके निपटान की आवश्यकता पड़ती है।

स्तनपान कराने के असंख्य लाभों और माँ के दूध के विकल्पों (बी.एम.एस.) के उपयोग के नुकसानों के बावजूद, बैबी पाउडर मिल्क की बिक्री तेजी से बढ़ रही है। इसका मुख्य कारण स्तनपान समर्थक नीतियों और कार्यक्रमों का कमजोर कार्यान्वयन है। जब कॉमर्शियल बैबी फूड्स (शिशु खाद्य पदार्थ) की मार्केटिंग के विनियमन की बात आती है तो सरकार कार्रवाई करने में पिछड़ जाती है।[7,8] माँ के दूध के विकल्पों की मार्केटिंग पर अंतर्राष्ट्रीय आचार संहिता के बारे में एक नवीनतम वैश्विक रिपोर्ट के अनुसार 194 देशों में से सिर्फ 25 देशों ने एक राष्ट्रीय कानून बनाया है और अपने को एक बड़ी हद तक इस आचार संहिता के साथ जोड़ा है।[9] 2018 में माँ के दूध के विकल्पों की वैश्विक बिक्री 61.2 बिलियन अमेरिकी डालर थी, जिसके 2018 और 2025 के बीच 10 प्रतिशत से भी अधिक की अनुमानित चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (सी.ए.जी.आर.) से बढ़ने की उम्मीद है। इनकी 2025 में वैश्विक बिक्री 119 बिलियन अमेरिकी डालर से अधिक होने का अनुमान है।[10] 2016 में भारत में माँ के दूध के विकल्पों की कुल बिक्री 26,900 टन थी, जिसके 2021 में बढ़ कर 30,700 टन की बिक्री (14 प्रतिशत की संचयी वृद्धि) होने का अनुमान है। यूरोमॉनिटर की रिपोर्ट के अनुसार 2016 में भारत में लगभग 12,000 टन स्टैन्डर्ड शिशु फॉर्मूला (0-6 महीने) की बिक्री हुई थी।[11]

2016 में भारत में माँ के दूध के विकल्पों की कुल बिक्री 26,900 टन थी, जिसके 2021 में बढ़ कर 30,700 टन की बिक्री (14 प्रतिशत की संचयी वृद्धि) होने का अनुमान है।

दूसरी ओर, भारत में स्तनपान कराने के तौर तरीकों की स्थिति पर तत्काल ध्यान देना आवश्यक है क्योंकि जन्म के एक घंटे के भीतर स्तनपान शुरू कराने की दर 57 प्रतिशत है, जबकि केवल स्तनपान कराने दर 58 प्रतिशत बनी हुई है।[12]

माँ के दूध के विकल्पों (बी.एम.एस.) के उपयोग से संबंधित उत्पादों का निर्माण आगे ग्रीनहाउस गैस (जी.एच.जी.) उत्पन्न करता है और पृथ्वी पर अतिरिक्त बोझ डालता है :

- फॉर्मूला की पैकिंग का टिन/कार्ड बोर्ड
- बोतलों और उनके निपल्स का प्लास्टिक
- मार्केटिंग और वितरण का लेबल और मुद्रण
- बोतलों को स्टरलाइज़ करने के स्टेरलाइज़र

संदर्भ : फॉर्मूला फोर डिजास्टर[4]

हमने माँ के दूध के विकल्पों के प्रभाव के परिमाण को कैसे निर्धारित (क्वांटिफाई) किया?

बेबी मिल्क फॉर्मूले (शिशु दूध के फॉर्मूले) के उपयोग से पर्यावरणीय क्षरण की सीमा पर बहुत कम अध्ययन हुए हैं। ब्रेस्टफीडिंग प्रमोशन नेटवर्क ऑफ इंडिया (बी.पी.एन.आई.) और इंटरनेशनल बेबी फूड एक्शन नेटवर्क (आई.बी.एफ.ए.एन.) ने वैश्विक विशेषज्ञों के सहयोग से बेबी मिल्क फॉर्मूले की विभिन्न श्रेणियों के कारण ग्रीनहाउस गैसों के औसत उत्सर्जन की गणना के लिए एक नवीन विधि विकसित की। इस विधि के अंतर्गत बेबी मिल्क फॉर्मूला उत्पादों के संयोजन का पता लगाया गया। यह इस विधि की सहायता से प्रत्येक घटक (इनग्रेडिएंट) के योगदान की जानकारी पाकर और वैयक्तिक घटकों के कारण ग्रीनहाउस गैसों की पहचान कर किया गया।[13,14] इस विधि का उपयोग करते हुए वर्ष 2016 के लिए भारत में बेबी मिल्क फॉर्मूले से ग्रीन हाउस के उत्सर्जन की गणना की गई और वर्ष 2021 के लिए अनुमान का आकलन भी किया गया।

एक अन्य अध्ययन ने चार उत्पादक देशों और चार उपभोक्ता देशों में माँ के दूध के विकल्पों (बी.एम.एस.) के उत्पादन एवं खपत के कार्बन फुटप्रिंट्स का अनुमान लगाया। अध्ययन ने सभी देशों में माँ के दूध के विकल्पों के उपयोग की तुलना में स्तनपान कराने से कार्बन फुटप्रिंट्स कम पाए।[15]

रेखाचित्र 1: भारत– 2016 में माँ के दूध के विकल्पों की बिक्री और 2021 में अनुमानित बिक्री ('000 टन)[10]

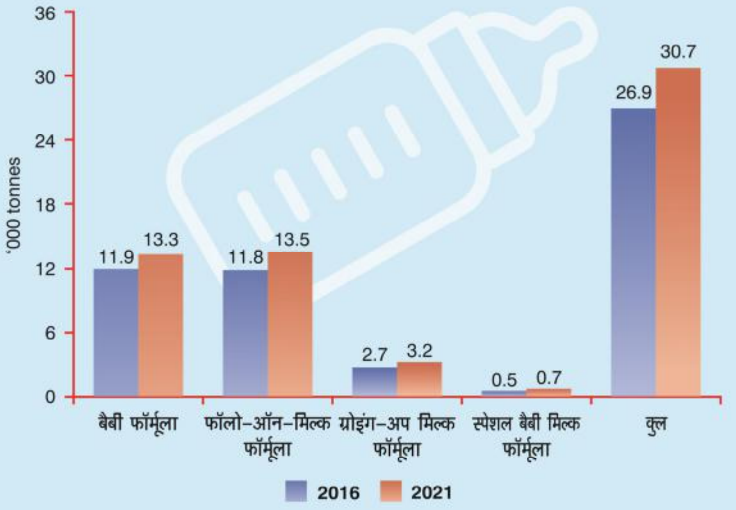

रेखाचित्र 2: भारत– 2016 में माँ के दूध के विकल्पों से ग्रीनहाऊस गैसों का उत्सर्जन और 2021 में अनुमानित उत्सर्जन ('000 टन)[10,13]

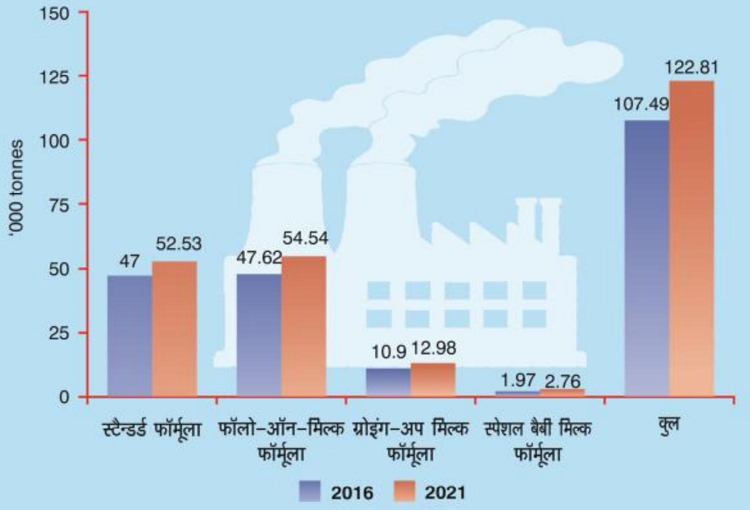

*भारत में **2016** में माँ के दूध के विकल्पों के कारण ग्रीनहाउस गैसों का कुल उत्सर्जन **107,490** टन **CO2 eq** था, जिसमें से ग्रोइंग अप मिल्क के कारण **10,900** टन था, स्टैन्डर्ड फार्मूला के कारण **47,000** टन था, फॉलो-ऑन फार्मूले के कारण **47,620** टन था और स्पेशल बेबी मिल्क फॉर्मूला के कारण **1,970** टन था। **2021** में माँ के दूध के विकल्पों के कारण ग्रीनहाउस गैसों का अनुमानित कुल उत्सर्जन **1,22,810** टन होने का अनुमान है, जिसमें फॉलो-ऑन फॉर्मूला का अधिकतम योगदान होगा।*

माँ के दूध के विकल्पों के पर्यावरण पर प्रभाव में कमी लाना

माँ के दूध के विकल्पों (बी.एम.एस.) के पर्यावरण पर प्रभाव में उन प्रयासों से कमी लाई जा सकती है, जो उनकी खपत को कम कर सकते हैं और माताओं एवं परिवारों के लिए अच्छी सहायता प्रणालियों के जरिए स्तनपान-दर बढ़ा सकते हैं। शिशु और छोटे बच्चों को आहार देने की वैश्विक रणनीति में शिशु एवं छोटे बच्चे को आहार देने (आई.वाई.सी.एफ.) के बारे में नीतियों और कार्यक्रमों को मजबूत बनाने की एक नीतिगत रूपरेखा प्रदान की गई है। वर्ल्ड ब्रेस्टफीडिंग ट्रेंड्स इनिशिएटिव (WBTi)[16] द्वारा आई.वाई.सी.एफ. नीतियों और कार्यक्रमों की समय-समय पर निगरानी से भारत (देखें: रेखाचित्र-3) में कार्यान्वयन में गंभीर खामियों का पता चला। स्तनपान-दर को बढ़ाने के लिए निम्नलिखित मामलों में निवेश आवश्यक है :

- स्तनपान के संरक्षण के लिए पहल करना
- आमने-सामने रह कर परामर्श देकर माताओं की सहायता करना
- स्तनपान कराने वाली सभी माताओं को मातृत्व सुरक्षा प्रदान करना
- सभी संभव माध्यमों के जरिए प्रोत्साहन देना

माँ के दूध के विकल्पों (बी.एम.एस.) की मार्केटिंग और उपयोग का विनियमन सुरक्षा की कुंजी है। यह तब अत्यंत स्पष्ट हो जाता है, जब भारत में माँ के दूध के विकल्पों की बिक्री की तुलना की जाती है (राष्ट्रीय कानून का एक बड़ी हद तक आचार संहिता के साथ जुड़ाव) और चीन (आचार संहिता में राष्ट्रीय कानून के कुछ प्रावधानों को शामिल करना)। (देखें: रेखाचित्र 4 और 5)

रेखाचित्र 3: भारत– WBTi का मूल्यांकन – नीतियां और कार्यक्रम संकेतन स्कोर (2018)
(10 में से स्कोर)

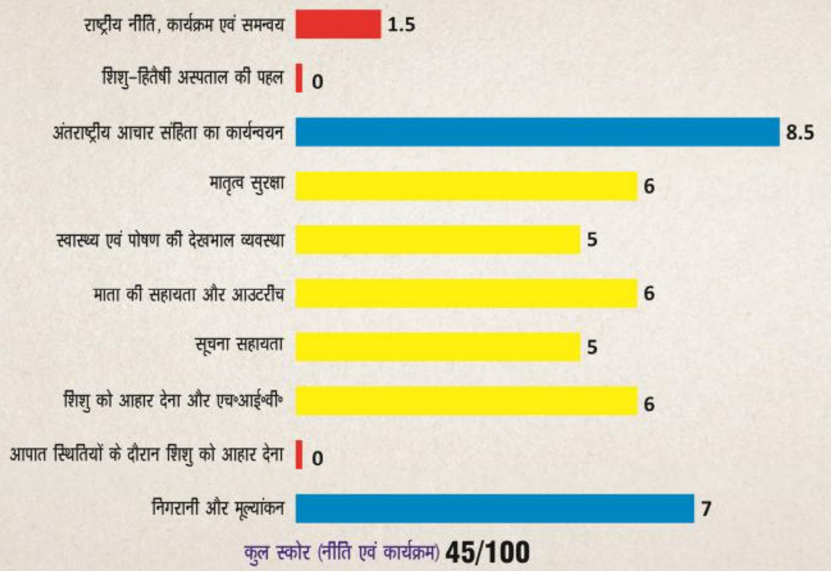

Source: WBTi India Report 2018

रेखाचित्र 4: भारत और चीन–2016 में माँ के दूध के विकल्पों (बी॰एम॰एस॰) की बिक्री और 2021 में अनुमानित बिक्री ('000 टन)[10]

रेखाचित्र 5: भारत और चीन–माँ के दूध के विकल्पों (बी॰एम॰एस॰) से 2016 में ग्रीनहाऊस गैसों का उत्सर्जन और 2021 में अनुमानित उत्सर्जन ('000 टन)[10]

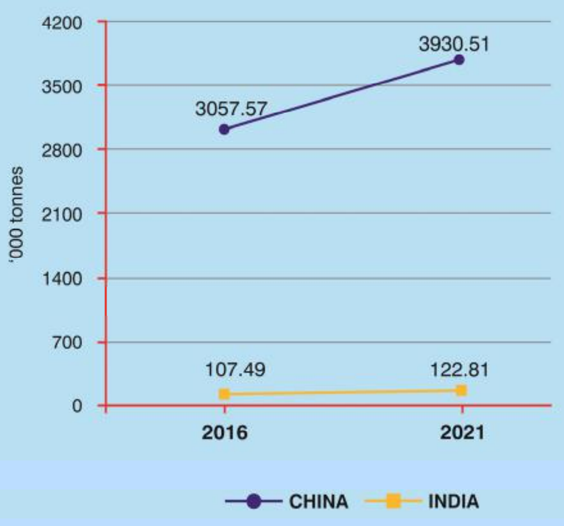

कार्रवाई संबंधी सुझाव

नीति निर्माता/कार्यक्रम प्रबंधक राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर क्या कर सकते हैं?

1. लोगों और स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के बीच माँ के दूध के विकल्पों (बी.एम.एस.) के पर्यावरण पर प्रभाव और स्तनपान की पर्यावरण की सततता के बारे में व्यापक जागरूकता के प्रसार के लिए एक अभियान शुरू करें।
2. भारत के WBTi की आकलन रिपोर्ट (2018) में बतलाई गई खामियों को दूर करें, विशेषकर सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों के अस्पतालों में देखभाल संबंधी मानकों का संवर्धन करें।

सिविल सोसायटी और स्तनपान के पैरोकार क्या कर सकते हैं?

1. राज्यों में स्वास्थ्य और पोषण से जुड़े विभिन्न विभागों को लिख कर उनकी आई.वाई.सी.एफ. की नीतियों एवं कार्यक्रमों के बारे में जानें।
2. मीडिया और सोशल मीडिया के जरिए अपने क्षेत्र में अपर्याप्त नीतियों एवं कार्यक्रमों और स्तनपान कराने के तौर तरीकों के बारे में जागरूकता बढ़ाएं।
3. बैबी फूड्स और फीडिंग बोतलों के निर्माताओं की प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रचार गतिविधियों, जैसे- सेमिनार के आयोजन, मीडिया अभियान, बैबी फूड्स का मुफ्त वितरण एवं सोशल मीडिया के जरिए माताओं से संपर्क करने आदि पर नजर रखें। उन्हें रिपोर्ट करें और विरोध करें।
4. प्रसूति सेवाओं वाले अस्पतालों में स्तनपान संबंधी तौर तरीकों, जैसे- शिशु के जन्म पर शीघ्र स्तनपान शुरू करवाने, शिशु एवं माता को अलग करने से बचने, प्रिलैक्टल आहार न देने, केवल स्तनपान कराने और डब्ल्यू.एच.ओ. द्वारा इंगित मेडिकल संकेत होने पर ही शिशु फॉर्मूला देने के बारे में पता लगाएं। यदि इनके बारे में गलत तौर तरीके पाते हैं तो रिपोर्ट करें।
5. स्तनपान-हितैषी नीतियों और सहायता के लिए अपने संसद सदस्यों/विधानसभा सदस्यों से संपर्क करें।
6. विश्व स्तनपान सप्ताह के दौरान अपनी गतिविधियों को बी.पी.एन.आई. के सचिवालय के साथ साझा करें।

अस्पताल और डॉक्टर क्या कर सकते हैं?

1. पता करें कि क्या आपका अस्पताल सफलतापूर्वक स्तनपान करवाने के लिए दस चरणों पर अमल करता है। आप बी.पी.एन.आई.-डब्ल्यू.एच.ओ.-भारत सरकार द्वारा विकसित टूल का उपयोग कर सकते हैं।
2. डब्ल्यू.एच.ओ. द्वारा इंगित संकेतों के अनुसार पाउडर बैबी फॉर्मूला का उपयोग कम से कम करें।[17]
3. गर्भावस्था के दौरान, जन्म के समय एवं बाद में माता और बच्चे के अस्पताल से डिस्चार्ज होने तक और फ़ॉलो-अप विजिट्स में आमने-सामने रह कर महिलाओं की सहायता करें।

माता-पिता क्या कर सकते हैं?

1. पता करें कि शिशु के प्रसव के लिए प्रसूति सेवाओं वाले अस्पतालों में स्तनपान करवाने संबंधी सहायता उपलब्ध है या नहीं। उस प्रसूति अस्पताल को चुनें जहां यह सहायता उपलब्ध है।
2. अपने डॉक्टरों से कहें कि आप शिशु के साथ शारीरिक स्पर्श चाहेंगी और अपने शिशु के लिए फॉर्मूला का उपयोग नहीं करेंगी।
3. बेबी फूड कंपनियों के भ्रमक प्रचार व्यवहार को जानने के लिए Zee5 वेब पोर्टल पर फिल्म- 'टाइगर्स' देखें।
https: //www.zee5.com/movies/details/tigers/0-0-7599

References

1. https://www.who.int/news-room/fact-sheets/detail/healthy-diet
2. Victora CG, Bahl R, Barros AJ, França GV, Horton S, Krasevec J, Murch S, Sankar MJ, Walker N, Rollins NC; Lancet Breastfeeding Series Group. Breastfeeding in the 21st century: epidemiology, mechanisms, and lifelong effect. Lancet. 2016 Jan 30;387(10017):475-90.
3. Myr R. Climate change: Breastfeeding tackles both obesity and climate change. BMJ. 2008 Jun 28;336(7659):1454.
4. Linnecar A, Gupta A, Dadhich JP, Bidla N. Formula for Disaster. IBFAN Asia/BPNI; 2014. Available at:https://www.bpni.org/docments/FormulaForDisaster.pdf
5. Why invest, and what it will take to improve breastfeeding practices? http://www.thelancet.com/series/breastfeeding, Vol 387 January 30, 2016, 491-504
6. The greenhouse gases carbon dioxide, methane and nitrous oxide
7. Kent G. Global infant formula: monitoring and regulating the impacts to protect human health. Int Breastfeed J. 2015 Feb 23;10:6.
8. Baker P, Smith J, Salmon L, Friel S, Kent G, Iellamo A, Dadhich JP, Renfrew MJ. Global trends and patterns of commercial milk-based formula sales: is an unprecedented infant and young child feeding transition underway? Public Health Nutr. 2016 Oct; 19(14): 2540-50.
9. Marketing of breast-milk substitutes: national implementation of the international code, status report 2020. Geneva: World Health Organization; 2020.
10. https://www.prnewswire.com/news-releases/breast-milk-substitutes-market-value-to-hit-119-billion-by-2025-global-market-insights-inc-300864327.html#:~:text=Men's%20Interest-, Breast%20Milk%20Substitutes%20Market%20Value%20to%20Hit%20%24119%20Billion,%3A%20Global%20Market%20Insights%2C%20Inc.
11. Euromonitor International (2016).Passport-Baby Food in India.
12. Ministry of Health and Family Welfare (MoHFW), Government of India, UNICEF and Population Council. 2019. Comprehensive National Nutrition Survey (CNNS) National Report. New Delhi. Available at: https://nhm.gov.in/WriteReadData/l892s/1405796031571201348.pdf
13. Milk formula includes standard milk formula (0-6 months), follow-on milk formula (7-12 months); toddler milk formula (13-24 months) and special baby milk formula (0-6 months)
14. Dadhich JP, Smith J, Iellamo A, Suleiman A. Report on Carbon Footprints Due to Milk Formula: A study from selected countries of the Asia- Pacific region. Available at: https://www.bpni.org/report/Carbon-Footprints-Due-to-Milk-Formula.pdf
15. Karlsson JO, Garnett T, Rollins NC, Röös E. The carbon footprint of breastmilk substitutes in comparison with breastfeeding. J Clean Prod. 2019;222:436-445.
16. Has Your Nation Done Enough to Bridge Gaps? http://new.worldbreastfeedingtrends.org/uploads/resources/document/84-country-report.pdf
17. Https://www.who.int/nutrition/publications/infantfeeding/WHO_NMH_NHD_09.01/en/

bpni
putting child nutrition at the forefront of social change

IBFAN
defending breastfeeding

WBT*i*
WORLD BREASTFEEDING TRENDS INITIATIVE

Breastfeeding Promotion Network of India (BPNI)

WBTi Global Secretariat Office

Address: BP-33, Pitampura, Delhi 110 034. *Tel:* +91-11-27312705, 42683059

bpni@bpni.org   http://www.bpni.org

@bpniindia   @bpni.org

https://www.youtube.com/user/bpniindia

About BPNI

The Breastfeeding Promotion Network of India (BPNI) is a 28 years old registered, independent, non-profit, national organisation that works towards protecting, promoting and supporting breastfeeding and appropriate complementary feeding of infants and young children. BPNI works through policy analysis, advocacy, social mobilization, information sharing, education, research, training and monitoring the company compliance with the IMS Act. BPNI is the Regional Coordinating Office for International Baby Food Action Network (IBFAN), South Asia. BPNI also serves as the global secretariat for World Breastfeeding Trends Initiative (WBT*i*) programme, that analyses policy & programmes and galvanises action at country level.

BPNI's Ethical Policy

BPNI does not accept funds or any support from the companies manufacturing baby foods, feeding bottles or infant feeding related equipments. BPNI does not associate with organizations having conflicts of Interest. We request every one to follow this ethical stance while celebrating World Breastfeeding Week.

Acknowledgements

This action folder has been produced by the BPNI with the support of the UNICEF India.

Written and edited by: Dr. J.P. Dadhich

Reviewed by: Dr. Arun Gupta, Nupur Bidla, Abhilasha Rawat, Yashika Joshi, Zarrin Ashraf

Designed by: Amit Dahiya